

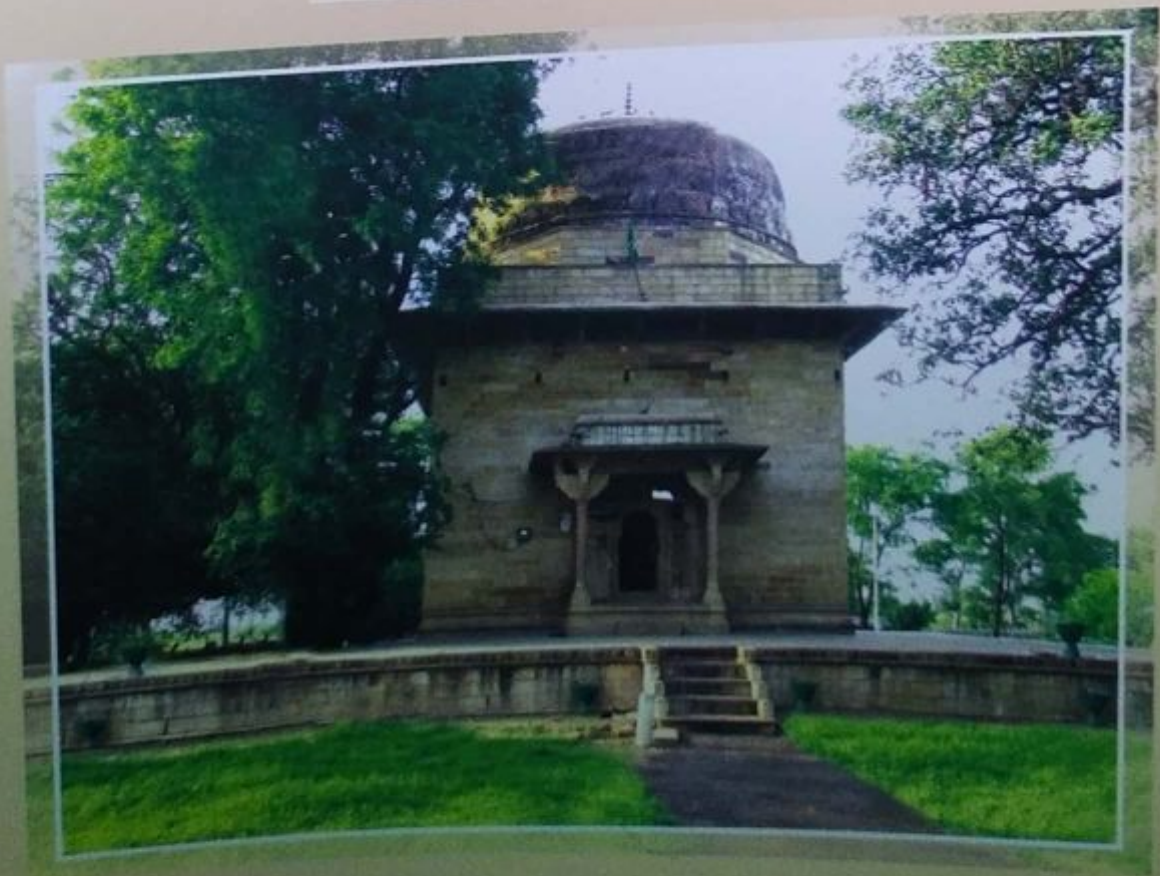
22

ISSN : 0976-5778

वर्ष : 2018-19

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के धर्म-आध्यात्म और पर्यटन पर केन्द्रित



ईसुरी-22

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2019 अंक - 22 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी
कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्मल आर.एम. जोशी

कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. निवेदिता मैत्रा

प्रो. चंदा बेन

प्रधान संपादक

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

सहायक संपादक

विवेकानंद उपाध्याय, मनीष कुमार

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : डॉ. मशकूर अहमद

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संपादक मण्डल

डॉ. हिमांशु कुमार

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. अफरोज बेगम

डॉ. सत्य प्रकाश उपाध्याय

श्री सतीष कुमार

श्री विवेक विसारिया

भाग - दो : जैन धर्म की प्राचीन विरासत और बुन्देलखण्ड

1. बुन्देलखण्ड के प्राचीन जैन तीर्थ	- पद्मश्री कैलाश मड़वैया	93
2. जैन तीर्थ अहार जी	- अभिनन्दन गोइल	101
3. बुन्देलखण्ड में जैन तीर्थों की शृंखला	- डॉ. बारेलाल जैन	104
4. नैनागिर की जैन आस्था	- गोविन्द सिंह दांगी	110
5. कुण्डलपुर की प्राचीनता	- मनीष कुमार जैन	114
6. सोनागिर : जैन धर्म का प्राचीन स्थल	- आकांक्षा रावत	116
7. पपौरा : जैन आस्था का प्रतीक	- अभिनन्दन गोइल	119

भाग - तीन : चिराग-ए-आलम : सूफियाना बुन्देलखण्ड

1. धामोनी शरीफ : अनोखी दरगाह	- डॉ. मशकूर अहमद	123
2. पीलीकोठी वाले बाबा : सागर की रूहानी पहचान	- डॉ. अफ़रोज बेगम	126
3. संत अब्दाल पीर साहब : जतारा	- हरिविष्णु अवस्थी	130
4. दतिया जिले की प्रमुख दरगाहें	- डॉ. कामिनी सेंवढा	135
5. बुन्देलखण्ड की सूफी परम्परा	- डॉ. मशकूर अहमद	138
6. हजरत इलाही शाह बाबा : टीकमगढ़	- राजीव नामदेव	150

भाग - चार : आध्यात्मिक बुन्देलखण्ड

1. सनकादिमुनि का स्थान एवं महत्व	- डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव	152
2. बुन्देलखण्ड में सिद्धों की परम्परा	- गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त	161
3. संत जूड़ श्राइन झाँसी	- फादर वी.जे. थोमस	166
4. माँ हरसिद्धि देवी : रानगिर	- प्रो. चंदा बैन	168
5. तारणपंथ की भूमि : बुन्देलखण्ड	- नलिन जैन	173
6. रावतपुरा धाम : एक आध्यात्मिक तीर्थ	- डॉ. राजेन्द्र यादव	174
7. पीताम्बरापीठ दतिया : एक परिचय	- सौरभ सिंह	177
8. सांची के विश्व प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप	- कपिल कुमार गौतम	180
9. कबीर साहेब आश्रम : सागर	- अवधेश कुमार	183
10. मैहर की शारदा भवानी	- डॉ. ओमप्रकाश चौबे	187
11. रतनगढ़ की देवी	- डॉ. मुन्नीलाल शर्मा	191
12. बुन्देलखण्ड में प्रणामी सम्प्रदाय	- शिवराम मौर्य	194
13. माँ विन्ध्यवासिनी : बलदेवगढ़	- डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी	198

पीलीकोठी वाले बाबा : सागर की रूहानी पहचान

डॉ. अफ़रोज बेगम*

भारतभूमि विभिन्न धर्मों, मान्यताओं और संस्कृतियों का देश है। अनेक नदियाँ समुद्र में जाकर अपने अस्तित्व को विलीन कर देती हैं, वैसे ही विविध धर्मों तथा संस्कृतियों ने मिलकर इसे विशाल और व्यापक बनाया है। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि इसने सबको अपने में आत्मसात करके अपने अक्षुण्ण रूप को बनाये रखा। इस भारत वर्ष में समय-समय पर अनेक सूफी-सन्तों का आगमन हुआ तथा ये सूफी सन्तों ने अपने स्वभाव के अनुरूप ही सम्पूर्ण पृथ्वी को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य किया।

सूफी-सन्तों का पूरे समाज में मात्र एक काम रहा है- सामाजिक सौहार्द का भाव, मनुष्य का कल्याण करना, प्रेम, मुहब्बत को बरकरार रखना। वास्तव में सूफी सम्पूर्ण मानवता का कल्याण चाहते थे। इन सूफियों के आस्ताने में राजा-रंक तथा सभी जाति-धर्म के लोगों का आना जाना लगा रहता था। आज भी इन सूफी-सन्तों की दरगाहों पर आने वाले प्रत्येक जाति-धर्म के लोग जाति-धर्म की दीवार ढहाकर प्रेमभाव के साथ यकीदत के साथ जाते हैं।

किसी ने ठीक ही कहा है - “जुड़ता जब सम्बन्ध हृदय का, भेदभाव मिट जाता है/देश-जाति रंगों से गहरा, मानवता का नाता है।”

परोपकारी प्रवृत्ति के कारण संतो-सूफियों-वलियों को जो अनन्द की प्राप्ति होती है, वह स्वतः स्फुरित है, जैसे मेंहदी का रंग रचे जाने वालों के हाथ में स्वतः ही आ जाता है। रहीम ने परोपकार की महिमा का बखान किया है-

“रहिमन को सुख होत है, उपकारी के संग।
बॉटनवारे को लगे, जो मेंहदी के रंग।।”

हिन्दुस्तान में सूफियों के 16-17 सिलसिले हैं, जिसमें से चार सिलसिले बहुत मशहूर हुए: (1) चिश्तिया (2) सुहर्वदिया (3) कादिरिया तथा (4) नक्शबदिया।

चिश्तिया सिलसिले की शुरुआत भारत में सर्वप्रथम ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी ने की। ये संवत् 1199 से 1293 में हुए। ये एशिया माइनर से चलकर खुरासान के चिश्त नगर में निवास करते थे जिसके कारण ये चिश्ती कहलाने लगे।

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर शरीफ वाले) के बारे में परशुराम चतुर्वेदी अपने ‘सूफी काव्य संग्रह’ पुस्तक में लिखते हैं - इनका जन्म सीस्तान के संजर नामक नगर में हुआ था। और तातारों के आक्रमण से प्रभावित होकर, इन्होंने अंत में एक भ्रमणशील फकीर का जीवन स्वीकार कर लिया था। इन्होंने कई प्रसिद्ध सूफी पीरों के व्यक्तिगत सम्पर्क में रहकर अपने आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि की। ये कई देशों

*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.) 470003

इसकी धुन है या नवी सलाम अलैका या रसूल सलाम अलैका, जो लोग परेशानी में होते हैं या मन्त पूरी करना चाहते हैं तो वे लोग उस समय जरूर जाते हैं। बहुत से लोग 'मज़ार चिल्ला' भी करते हैं जो चालीस दिन का अहद किया जाता है। चालीस दिन पूरा होने से पहले कोई रास्ते में कोई बाँधा न आवे, चिल्ला करने वाला बहुत चौकन्ना तथा साफ-सफाई से रहता है ताकि उसकी मन्त-मुराद तथा परिशानियाँ दूर हो सके।

दाऊद मक्की चिश्ती बाबा की मज़ार पर लोग फूल-माला चादर, मिठाई इत्यादि बड़े यकीदत से चढ़ाते हैं किन्तु विदेशों में ऐसा नहीं है। क्योंकि फूल-माला, चादर, मिठाई चढ़ाने का कान्सेप्ट (विचार) हिन्दू धर्म के मंदिरों से आया है। मंदिरों में चुनरी, माला, फूल, मिठाई इत्यादि चीजें हिन्दू धर्म के लोग अपने देवी-देवता को चढ़ाते थे। और यह गौर तलब है कि भारत में सूफी-सन्तों की मज़ार पर आने वाले ज्यादा तादात में हिन्दू घराने से ताल्लुक रखते हैं। ये जब मज़ारों पर जाते तो कुछ चढ़ावा जरूर चढ़ाते थे, जो परम्परा के रूप में सभी लोग एक-दूसरे का देखकर करने लगे। और इस तरह न केवल हिन्दू अपितु भारतीय मुस्लिम समाज भी देखा-देखी चादर, फूलमाला, मिठाई इत्यादि चढ़ावे के रूप में भेंट करने लगे।

पीली कोठी की कमेटी में मु. नईम खान, नसीम खान का नाम है, दोनों भाई हैं। पीली कोठी के मुजाबिर जिसे सज्जादा नसीम कहा जाता है, ये मज़ार की देखभाल करते हैं।

दाऊद मक्की चिश्ती साबरी बाबा के नाम से 'चिश्ती' तथा 'साबरी' दोनों ही सिल-सिले का नाम जुड़ा हुआ है, चिश्ती से चिश्तिया सिलसिला जो ख्वाजा मुईनुद्दीन से भारत में शुरू हुआ था से संबंधित है, जिससे पता लगता है कि ये अरब के थे जो 72 के समूह आए थे और हिन्दुस्तान के कोने-कोने में फैलकर लोगों की खिदमत करते थे और अमन, चैन, मुहब्बत की

सौगात लोगों को देते थे। दूसरा इनके नाम के साथ 'साबरी' शब्द भी जुड़ा हुआ है। जो चिश्ती सम्प्रदाय की दो उपशाखाओं में से एक है। 'निजामिया' दूसरा 'साबिरिया'। 'साबिरिया' बड़े सन्न और संतोष प्रवृत्ति वाले सूफी होते थे किन्तु बड़े जलाली होते थे तथा 'निजामिया' शान्त प्रवृत्ति वाले हंसमुख होते थे।

ऐसा जान पड़ता है कि इनके नाम के साथ 'साबिर' शब्द का जुड़ना 'साबिरिया' उपशाखा की ओर संकेत करता है। वास्तव में अलाउद्दीन साबरी के नाम पर साबिरिया 'उपशाखा' की नींव पड़ी। इस तरह इनके नाम 'चिश्ती' तथा 'साबरी' दोनों ही जुड़ा है। हजरत पीली कोठी वाले बाबा के गुरु (पीर) हजरत शम्सुद्दीन तुर्क पानीपत (हरियाणा) हैं और हजरत शम्सुद्दीन तुर्क पानीपती के गुरु हजरत अलाउद्दीन साबरी और बाबा फरीदउद्दीन गंजशकर पाकिस्तान हैं। इसी सिलसिले के कारण पीली कोठी वाले बाबा चिश्ती साबरी दोनों सिलसिले का सबाब रखते हैं। क्योंकि बाबा के गुरु चिश्ती साबरी दोनों सिलसिले से ताल्लुक रखते हैं।

कुतुब हजरत दाऊद मक्की चिश्ती साबरी के लिए कहा जा सकता है -

“पर उपकार निरत जो सज्जन कभी नहीं मरते हैं।
चन्द्र सूर्य जब तक है उन पर यशः पुष्प झरते हैं।”

न जाने कितनी पीढ़ियाँ गुजर जाती हैं लेकिन ऐसे सूफी, वली, पीर, औलियाँ की दरगाह पर लोग बड़ी शिद्दत के साथ तशरीफ लाते रहेंगे। इसके यश का झण्डा फहराता रहेगा। हम आम लोग न रहे न रहें, लेकिन ये सूफी-सन्त कभी मरते नहीं पर्दा कर जाते हैं और अपने सम्पूर्ण जीवन में या पर्दा के बाद भी देश, समाज की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। ऐसे सूफी-सन्तों को मेरा बड़ी यकीदत के साथ सलाम पेश है जो अपनी रहनुमाई से न केवल सागर वासी बल्कि अन्य जगहों से आये लोगों पर भी रहमों करम फरमाते हैं। □